HISTORY

B.A.(Hon's)PART-I

Paper-I (Ancient Indian History)

Unit-I (प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 15

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें □□□

https://youtu.be/P1e_LxMHPe4

✓✓प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (भाग- 5)

✓वैदिक (धार्मिक)स्रोत (बौद्ध साहित्य....)

✓बौद्ध साहित्य.

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत के रूप में बौद्ध साहित्य का महत्वापूर्ण स्थान है।

बौद्ध साहित्य में प्रथम स्थान जातकों का है। इनमें बुद्ध के पूर्वजन्म की गाथाएँ हैं। ये गाथाएं काल्पनिक हैं, फिर भी इनके आधार पर भारतीय समाज का दिग्दर्शन होता है।

दूसरा स्थान त्रिपिटक का है। बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद त्रिपिटकों की रचना हुई थी। महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के उपरान्त आयोजित विभिन्न बौद्ध संगीतियों में संकलित किये गये त्रिपिटक सम्भवतः सर्वाधिक प्राचीन धर्मग्रंथ हैं। **त्रिपिटक तीन हैं– (1) सुत्त पिटक, (2) विनय पिटक एवं (3) अभिधम्म पिटक ।**

(1) सुत्तपिटक :– यहां सुत्त का शाब्दिक अर्थ है धर्मोपदेश। बुद्ध के धार्मिक विचारों एवं उपदेशों के संग्रह वाला यह पिटक सम्भवतः त्रिपिटकों में सर्वाधिक बड़ा एवं श्रेष्ठ है ।

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COOLEGE)

यह पिटक पांच निकायों में विभाजित हैं, जो इस प्रकार हैं–(1) दीर्घ निकाय (2) मज्झिमनिकाय (3) संयुक्त निकाय, (4) अंगुत्तर निकाय (5) खुद्दक

(क) दीर्घ निकाय–गद्य एवं पद्य दोनों में रचित इस निकाय में बौद्ध धर्म के सिद्धांत का समर्थन एवं अन्य धर्मों के सिद्धान्तों का खण्डन किया गया है । इस निकाय का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूक्त है 'महापरिनिब्बानसुत्त'। इस निकाय में महात्मा बुद्ध के जीवन के आखिरी क्षणों को वर्णन है।

(ख) मज्झिम निकाय– इस निकाय में महात्मा बुद्ध को कहीं साधारण मनुष्य के रूप में तो कहीं अलौकिक शक्ति वाले दैवी रूप में वर्णित किया गया है।

(ग) संयुक्त निकाय—गद्य एवं पद्य दोनों शैलियों के प्रयोग वाला यह निकाय अनेक 'संयुक्त का संकलन मात्र है।

(घ) अंगुत्तर निकाय –11 निपातों में संगठित इस निकाय में महात्मा बुद्ध द्वारा भिक्षुओं को उपदेश में कही जाने वाली बातों का वर्णन है।

(ङ) खुद्दक निकाय—भाषा, विषय एवं शैली की दृष्टि से सभी निकायों से अलग, लघु ग्रंथों के संकलन वाला यह निकाय अपने आप स्वतन्त्र एवं पूर्ण है । इसके कुछ अन्य ग्रंथ इस प्रकार है– खुद्दक पाठ, धम्मपद, उदान, इति बुत्तक, सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा एवं जातक । जातकों में बुद्ध के पूर्व जन्म से संबंधित करीब 500 कहानियों का संकलन है।

(2) विनय पिटक–इस ग्रंथ में मठ निवासियों के अनुशासन सम्बन्धी नियम दिये गये हैं, यह पिटक तीन भागों में विभक्त है–(1) सुत्त विभंग (2) खन्धक (3) परिवार ।

(क) सुत्त विभंग का शाब्दिक अर्थ है 'सूत्रों पर टीका' इसके दो भाग महाविभंग एवं भिखुनी विभंग हैं। महाविभंग में बौद्ध भिक्षुओं के लिए एवं भिखुनी विभंग में बौद्ध भिक्षुणियों हेतु नियमों का उल्लेख है।

(ख) खन्धक में मठ या संघ के निवासियों के जीवन के सन्दर्भ में विधि–निषेयों की विस्तृत व्याख्या की गयी है।

खन्धक के दो अन्य भाग महावग्ग एवं चुल्लवग्ग हैं। महवाग्ग में संघ के अत्याधिक महत्वपूर्ण विषयों का उल्लेख है। इसमें कुल 8 अध्याय है, पर चुलवग्ग, जिसमें 12 अध्याय है इसमें वर्णित विषय कम महत्वपूर्ण हैं।

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COOLEGE)

(ग) परिवार—प्रश्नोत्तर क्रम में है।

(3) अभिधम्म पिटक– इसमें बौद्ध मतों की दार्शनिक व्याख्या की गयी है । बौद्ध परम्परा की ऐसी मान्यता है कि इस पिटक का संकलन अशोक के समय में संपन्न तृतीय बौद्ध संगीति में (मोगतिपुत तिस्स ने किया । इस पिटक के अन्य सात ग्रंथ है– धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुगलपन्चति, कथावस्तु, यमक, पत्थान ग्रंथ आदि ।

त्रिपिटकों के अतिरिक्त पाली भाषा में लिखे गये कुछ अन्य महत्वपूर्ण बौद्ध ग्रंथ है– **मिलिंदपन्हो, दीपवंश व महावंश ।**

मिलिन्दपन्हो–इस ग्रंथ से ईसा की प्रथम दो शताब्दियों के भारतीय जन–जीवन के विषय में जानकारी मिलती है। इस ग्रंथ में यूनानी नरेश मिनांडर (मिलिन्द) एवं बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच वार्तालाप का वर्णन है ।

दीपवंश–लगभग चतुर्थ शताब्दी ई० में रचित सिंहल द्वीप के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला यह पहला ग्रंथ है।

महावंश–भदन्त महानामा द्वारा सम्भवतः 5 वीं व छठी शती ई० में रचित इस ग्रंथ में मगध के राजाओं की क्रमबद्ध सूची मिलती है।

संस्कृत भाषा में लिखित कुछ महत्वपूर्ण बौद्ध ग्रंथों में महावस्तु एवं ललित विस्तर से महात्मा बुद्ध के जीवन के विषय में जानकारी मिलती है | दिव्यावदान से परवर्ती मौर्य शासकों एवं शुंग वंश विषय में जानकारी मिलती है। अश्वघोष, जो सम्राट कनिष्क के समकालीन थे, की रचनाओं बुद्धचरित, सौन्दरानन्द एवं सारिपुत्र प्रकरण में प्रथम दो महाकाव्य एवं तीसरा नाटक है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बौद्ध साहित्य के अध्ययन से भारतीय इतिहास और विदेशों में बौद्ध परंपराओं के विकास के इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।अनेक विदेशी बौद्ध यात्रियों ने भी भारत संबंधी विवरण लिखे हैं।

आगे भी यह जारी है.....

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

DR. GUDDY KUMARI (A.I.D COOLEGE)

DR. GUDDY KUMARI (A.N.D COOLEGE)